॥ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ॥



॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः॥

श्रीस्तवाराधना

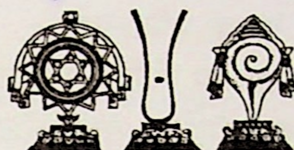
अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज



आचार्यपंचायतन् महर्षिवर्य श्रीसनकादिक , देवर्षि श्रीनारदजी
श्रीनिम्बार्क भगवान् , श्री श्रीनिवासाचार्य

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *



।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

श्रीस्तवाराधना

ग्रन्थ प्रणेताः--

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री ''श्रीजी'' महाराज

प्रकाशक--

विद्वत्परिषद्

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ

सलेमाबाद, पुष्करक्षेत्र, किशनगढ जि. अजमेर (राज०)

मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी मंगलवार

श्रीगीता जयन्ती, सं. २०७१ दिनांक २/१२/२०१४ ई.

वि० सं० २०७१   श्रीनिम्बार्काब्द ५१११

पुस्तक प्राप्ति स्थान--

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

फोन नं0 - 01497 -227831

प्रथमावृत्ति--१०००

मुद्रक--

श्रीनिम्बार्क मुद्रणालय

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

न्यौछावर

पन्द्रह रुपये

श्रीगुरवे नमः । परात्परगुरवे नमः।
परमेष्ठिगुरवे नमः। परमगुरवे नमः

यत्पादपङ्कजपरागनिषेवतृप्ता
योगप्रभावविद्युताखिलकर्मबन्धाः।
स्वैरं चरन्ति मुनयोऽपि न नह्यमानाः
तस्येच्छयाऽऽत्तवपुषःकुत एव बन्धः।

परम पूज्य श्री श्रीजी महाराज के श्रीचरणों में साष्टाङ्ग प्रणाम।

श्री श्रीजी महाराज ने अनेकानेक अद्भुत संस्कृत काव्यों की रचना की है। अभी मेरे पास उनकी रचना ''श्रीस्तवाराधना'' है इसमें अलौकिक श्रीपुष्कर-दशश्लोकी, श्रीहंसाष्टकस्तोत्र, श्रीमानसाष्टकस्तोत्र, श्रीपरशुराम-दशश्लोकी तथा सदुपदेश-दोहावली है। ये पांचों स्तव अद्भुत हैं इनमें प्रत्येक स्तव के प्रत्येक श्लोक में उनका अलौकिक पाण्डित्य तथा सब भक्तों पर अनोखी कृपा झलकती है। जो भी व्यक्ति इनको समझकर नित्य पाठ करेगा उसका कल्याण निश्चित है। यह निम्बार्क सम्प्रदाय के प्रायः सभी मूल सिद्धान्तों को समझ लेगा श्री श्रीजी महाराज ने श्रीस्तवाराधना के अलावा लगभग ४२ संस्कृत काव्य-स्तोत्रों की रचना की है जो संस्कृत साहित्य में अपना विशेष स्थान रखते हैं मैं श्री श्रीजी महाराज को सादर साष्टाङ्ग प्रणाम करता हूँ।

विनीत-

रसिकविहारी जोशी, एम. ए., व्याकरण शास्त्री
पी एच डी. बी एवम् डी. लिट रोरिसा
प्रोफेसर ऑफ संस्कृत फिलोसोफी न्यूयार्क, मेक्सिको

प्रास्ताविक

अनन्त श्रीविभूषित जगदुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीराधा-सर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज की तपःपूत युगलोपासना व्यापृत नव-नवेन्मेषशालिनी प्रज्ञा के कृपा प्रसाद स्वरूप रसिक भक्तों के लिए ''स्तवाराधना'' रूप अभिनव काव्य प्राप्त हुआ है। श्री ''श्रीजी'' महाराज की सत्तर वर्षों से निरन्तर काव्य साधना प्रवाहित हो रही है जिसमें लघु काव्यों से लेकर महाकाव्य तक की ४२ (बयालीस) रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी है। श्री ''श्रीजी'' महाराज की काव्य प्रतिमा प्राक्तन संस्कारवती एवं शक्तिमती है। अग्नि पुराण में कहा गया है-

नरत्वं दुर्लभं लोके विद्या तत्र सुदुर्लभा।
कवित्वं दुर्लभं तत्र शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा।।

श्री ''श्रीजी'' महाराज की काव्य सम्पदा में स्तुति रूप गीति काव्यों की महती सूचि है। गीतिकाव्यों में इनके कवित्व का अन्तस्तत्व अतीव मनोरम रूप से प्रस्फुटित होता है, वे स्वयं भी आनन्दातिरेक से सम्भरित रहते हैं तथा सहृदयों को भी रसास्वाद से आप्यायित कर देते हैं। श्री ''श्रीजी'' महाराज के स्तव साहित्य का फलक बहुत व्यापक है इसमें केवल सम्प्रदाय में समाराध्य राधा-कृष्ण ही स्तवनीय नहीं रहे हैं परं अन्य देव भी स्तुत हुए है। श्री ''श्रीजी'' महाराज ने परम तत्व को व्यापक और सर्वरूप माना है।

प्रस्तुत रचना में चार स्तोत्र हैं। ''पुष्कर दशश्लोकी''

स्तोत्र इसको प्रमाणित करता है कि भगवान् सर्वेश्वर की माया शक्ति के द्वारा उद्भासित तीर्थ ''तीर्थराज'' पुष्कर है। दशश्लोकों में श्री ''श्रीजी'' महाराज ने सृष्टि के आदिकाल से महिमामण्डित तीर्थराज पुष्कर की विशेषताओं को प्रकट किया है।

सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा से निर्मित होना ही तीर्थराज का महत्त्व है। सावित्रीजी यहाँ विराजती है। यहाँ प्राची-सरस्वती और नन्दा आदि प्राचीन पवित्र नदियों का जल विद्यमान है। ब्रह्मपुराण में कहा गया है कि सावित्री, गायत्री, श्रद्धा, मेधा और सरस्वती ये पाँचों पुण्यतीर्थ ही मिलकर सरस्वती बने हैं--

सावित्री चैव गायत्री श्रद्धा मेधा सरस्वती।
एतानि पञ्च तीर्थानि पुण्यानि मुनयो विदुः।
संगतानि च पुण्यानि पञ्च नद्यः सरस्वती।।

ब्रह्मपुराण १०२/०१

पद्मपुराण के सृष्टि खण्ड में कहा है कि ब्रह्मा ने पुष्कर में कनका, सुप्रभा, नन्दा, प्राची और सरस्वती इन पाँच स्रोत्रों को परिभाषित किया है--

कनका सुप्रभा चैव नन्दा प्राची सरस्वती।
पञ्चस्रोताः पुष्करेषु ब्रह्मणा परिभाषिताः।।

पद्मसृष्टि ३२/८७-८८

पुष्कर में दिव्य जल की स्थिति के साथ दिव्य ऋषि-महर्षि एवं महापुरुषों की उपस्थिति भी रही है। यह हंसावतार का केन्द्र रहा है तथा श्रीनिम्बार्क भगवान् एवं सम्प्रदाय परम्परा के आचार्यवर्य श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी के द्वारा संसेवित होने के कारण

भी अति प्रसिद्ध बन गया है।

द्वितीय स्तोत्र ''श्रीहंसाष्टकस्तोत्रम्'' है। श्रीहंस भगवान् का प्राकट्य तीर्थराज पुष्कर में हुआ वहीं पर उन्होंने सनकादिकों को सर्वेश्वर प्रभु की सेवा प्रदान की। यह सेवा निम्बार्क सम्प्रदाय में सनकादि परम्परा से भगवान् निम्बार्काचार्य एवं उत्तरवर्ती आचार्यों को प्राप्त हुई। इस स्तोत्र में भगवान् हंस के नाम-गुण-रूप एवं विभूति का वर्णन हुआ है।

तृतीय स्तोत्र ''श्रीमानसाष्टकस्तोत्रम्'' है। ज्ञान मार्ग में मन से परे जाना होता है परन्तु भक्ति मार्ग में आराध्य में मन को रमाना होता है। मन का स्वभाव अतीव चञ्चल है-''चञ्चलं हि मनः कृष्ण। प्रमाथि बलवद्दृढम्।'' (गीता)। श्री ''श्रीजी'' महाराज परम आराधक है भगवान् सर्वेश्वर की अहर्निश सेवा में जीवन व्यतीत किया है। अतः स्वानुभव से इनका वचन है-''सत्सङ्गतिः सदा श्रेष्ठा पालनीया च सर्वदा'' अर्थात् भगवान् सर्वेश्वर में मन को लगाने के लिए सत्सङ्गति श्रेष्ठ है और वह भी सर्वदा (नित्य) होनी चाहिए। सत्सङ्गति और प्रभु की आराधना से ही मन की व्याधि दूर हो सकती है तथा जीवन में शान्ति प्राप्त होना सुनिश्चित है। हम सब जीवन में शान्ति ही चाहते हैं अतः आध्यात्मिक आधि भौतिक और आधि दैविक शान्ति की प्राप्ति के लिए इन तीनों स्तोत्रों का स्वाध्याय और मनन आवश्यक है।

चतुर्थ स्तोत्र ''श्रीपरशुरामदशश्लोकीस्तोत्रम्'' है। श्रीपरशुरामजी की दिव्य शक्तियों से सम्पन्न आचार्य हुए तथा निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) अ. भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ की स्थापना

की है। इस स्तोत्र में श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी के अद्भुत चमत्कारपूर्ण कार्यों की ओर इङ्गित किया गया है। इस स्तोत्र के नित्य पाठ से साधक में दिव्य शक्तियों का आविर्भाव होता है और श्रीसर्वेश्वर प्रभु की आराधना में चित्त रमता है।

अनेक व्याधियों से पीड़ित रहते हुए भी ''स्वाधीन कुशलाः सिद्धिमन्तः'' कालिदास की इस उक्ति को यथार्थ में चरितार्थ करते हुए श्री ''श्रीजी'' महाराज ने भक्तजनों पर अहैतुकी कृपा करते हुए काव्य सर्जन किया है। श्रीसर्वेश्वर प्रभु से प्रार्थना है कि भक्तजनों को यह प्रसाद प्राप्त होता रहे।

शुभमिति-मार्गशीर्ष सुदि एकादशी मंगलवार
श्रीगीता जयन्ती
संवत् २०७१
दिनांक २/१२/२०१४

श्रीचरणसेवक-
डॉ. दुर्लभचन्द्र शर्मा
(डॉ. दुलीचन्द शर्मा)
प्राचार्य-
श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय
निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद
जिला-अजमेर (राज०)

''श्रीस्तवाराधना'' भगवदाराधना पद्धति का सूत्रात्मक स्वरूप

यह समस्त समक्ष विद्यमान सांसारिक क्लेश से पार पाना जीवमात्र के लिए परम कठिन है। बहुधा साधकजन विविध साधन मार्ग का उपदेश यथा समय यथावसर यथोपचारपूर्वक करते ही है। भिन्न-भिन्न परिस्थितियाँ मन को और भी परिभ्रमित करती हैं। स्वानुकूल वातावरण में संपोषित मानव जीवन प्रतिकूल स्थिति को पाकर शीघ्र ही नैराश्य को प्राप्त होता है, वस्तुतः सत्य सर्वदा समनुकूल रहता है, यह न किसी को संतापित करता है न समुत्तेजित करता है।

कभी विशाल सरोवर का दर्शन कर अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं कि निश्चल उसकी अगाध स्वच्छ स्फटिक समय निर्मल जल में स्वच्छ आकाश स्थित पूर्णचन्द्र कितना मनोहर व सुन्दर यथावत् दर्शित होता है। परन्तु जैसे ही वायु विशेष एवं अन्य हेतु से जल चलायमान हो जाता है। इसका अर्थ यह नहीं हो सकता कि उसमें स्थित चन्द्र भी इसी प्रकार ऊपर एवं नीचे की ओर गतिमान् हो चला है। यह सब एकमात्र विवेक राहित्य है। इसका अबबोध तब सम्भव होता है जब जन्म-जन्मान्तरों में समर्जित सत्कर्मोंदय एवं भगवत्कृपा से गुरु की सङ्गति प्राप्त होती है। भगवद्दर्शन किंवा शरणागति की प्राप्ति में सर्वथा बाधा माया जनित क्रोधादिक दुर्गण ही है। जब गुरु कृपा होती है तब जैसे ही इन

दुर्गणान्धकार जनित निशा तिरोहित हो जाती है वैसे ही उस निर्मल मानस में स्वभावतः भगवद्दर्शन हो जाता है। यह तो प्रभु स्वयं कहते हैं कि चर -अचर समस्त दृश्यमान् सृष्टि के कण-कण में वे ही स्थित है। नरत्व एवं नारायणता उभयविध स्वरूप उसी जगदाधार जगन्नियन्ता कर्तुमकर्तुं-मन्यथाकर्तुं सर्वसमर्थ अखिलेश्वर भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु का ही तो है। आचार्यचरण विनिर्दिष्ट सन्मार्ग का जब तक हम अवलम्बन नहीं करेंगे तब तक अनेकानेक योनियों में इसी प्रकार जीवन-मृत्यु का संवरण करते रहेंगे। स्वभावतः भगवान् श्रीसर्वेश्वर परम कृपागार है तो भगवद्भक्ति का निदर्शन करने वाले आचार्य स्वभाव से ही कृपासिन्धु है। इनकी कृपा इस अवनि पर भक्ति भागीरथी के स्वरूप से सर्वदा प्रवाहित रहती है। आवश्यकता उसमें अवगाहनमात्र की है। सकल कलुषता तत्क्षण प्रक्षालित हो जाती है।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज भी हम सब पर सर्वदा कृपावर्षण करते हैं। वह हम आचार्यश्री से विविध रूप में प्राप्त करते हैं। प्रथम तो आचार्यश्री के दर्शनमात्र प्राप्त करना भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु की अहैतुकी कृपा का फल विशेष है। भगवद् भक्ति मुक्त होकर श्रीसर्वेश्वर प्रभु की शरणागति हेतु अग्रसर होना ही पूज्य आचार्यश्री की कृपा विशेष है। गोस्वामी तुलसीदासजी की पंक्ति विशेष के हमें साक्षात्कृति सहज ही होती है कि ''सन्त हृदय नवनीत सम'' सुकोमल होता है। अतः इस संसार सागर में डुबते जीवमात्र के कल्याण हेतु सर्वथा प्रयासरत रहते हैं।

हमारे आचार्यचरणश्री की सत्कृतियाँ हम सब के लिए भगवत् कृपा प्राप्त्यर्थ सरणीभूत हैं। इनको अनुभूत करके भगवद्दर्शन की अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं। इसीक्रम में सद्यः प्रकाशित ''श्रीस्तवाराधना'' भगवदाराधाना हेतु रसिक भगवद् भक्तवृन्द के लिए परमोपयोगी है।

श्रीपुष्कर दशश्लोकी, श्रीहंसाष्टक स्तोत्रम्, श्रीमानसाष्टक स्तोत्रम् एवं श्रीपरशुराम दशश्लोकी इस प्रकार चतुर्विध स्तोत्र का प्रणयन ''श्रीस्तवाराधना'' है।

आचार्यश्री द्वारा सर्वप्रथम तीर्थगुरु वन्दना की है। जिस पुष्करारण्य के पावन क्षेत्र अन्तर्गत विद्यमान श्रीनिम्बार्कतीर्थ, श्रीनिम्बार्कतीर्थ अन्तर्गत विद्यमान निम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्काचार्यपीठ पर विराजमान महर्षि सनकादि संसेव्य अर्चाविग्रह शालग्राम स्वरूप गुञ्जाफल सदृश दक्षिणावर्ति चक्रांकित भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु।

यह स्पष्ट होता है कि तीर्थ स्थल जगदाधार जगन्निवास करुणार्णव भगवान् के ही स्वरूप समान है। तीर्थगुरु पुष्कर, निम्बार्क समप्रदाय का साम्बन्ध भी स्वाभाविक सनातन है। यही भाव इन पंक्ति से प्रकट होता है--

हंसावतारकेन्द्रश्च श्रीनिम्बार्ककरार्चितम्।
परशुरामदेवेन सेवितं पुष्करं भजे।।

संस्कृत निबद्ध होते हुये भी सम्प्रदायानुरागी भक्तवृन्द के लिए सूत्रात्मक यह निदर्शन सर्वथा हितावह है। श्रीहंस भगवान्, महर्षि सनकादि, आद्याचार्य श्रीनिम्बार्क भगवान् से लेकर

आचार्यपीठ के संस्थापक पूवाचार्यवर्य्य श्रीपरशुरामदेव तक की समस्त छवि इस श्लोक मात्र से सहज ही हृदयांकित हो जाती है।

''स्तवाराधना'' में द्वितीय ''श्रीहसांष्टक'' का है। तीर्थ स्थल वर्णन पश्चात् वहां पर विराजमान श्रीसर्वेश्वर प्रभु का ही श्रीहंस भगवान् के स्वरूप से वाङमय दर्शन हम सब प्राप्त कर रहे हैं। श्रीमद्भागवत में जिनका प्रिय चरित्र वर्णित है। हमारे परमाराध्य श्रीहंस स्वरूप में अवतीर्थ होकर मानस पुत्र महर्षि सनकादिकों के संशय को निर्मूल करते हैं। इसी प्रकार आचार्यश्री अपनी कान्त पदावली से भगवद् गुणगान कर हमारे हृदयाकाश में स्थित मोहान्धकार को दूर करते हैं।

पूज्य आचार्यश्री ने ''मानसाष्टक'' के माध्यम से कितना सुन्दर पक्ष समुपस्थित किया है। महर्षि सनकादिकों द्वारा किये गये प्रश्न को तथाविध आपश्री ने ''मानसाष्टक'' में अंकित किया है। मानसपुत्रों का मानस से किया गया प्रश्न पूर्णतः इस मन का ही चरित्र समुपस्थित करता है-

त्रिगुणात्मकमन्तश्च तथैव भुवनत्रयम्।
कथमन्योन्यसंत्यागः प्रश्नं चक्रुर्महर्षयः।।

मानस पुत्रों के मानस संशय को शान्त करने के लिए प्रभु हंसावतार से इसी पुष्करक्षेत्र में समवतीर्ण हुये व उपदेश प्रदान कर श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा प्रदान की वही समर्चा आचार्यपीठ में अद्यावधि अनवरत निर्वाध वर्तमान है।

''श्रीपरशुरामदशश्लोकी'' ''स्तवाराधना'' का चतुर्थ आचार्य आराधना विशेष समुपस्थित करता है। तीर्थस्वरूप, भगवद्

अवतार, मानस विचारोपरान्त आचार्यपीठ संस्थापक पूर्वाचार्यवर्य्य श्रीपरशु-रामदेवाचार्यजी महाराज के चारित्रिक विशेष गुणों का वर्णन आचार्यश्री ने इस स्तोत्र में किया है। वैसे तो श्रीपरशुरामषोडशी, चतुःश्लोकी श्रीस्तवरत्नाञ्जलि में स्थित है। पुनश्च यह दशश्लोकी हम सबके लिए हितकारिणी है।

बृहत्परशुरामाख्य सागरग्रन्थलेखकम्।
सत्सनातनधर्मस्य प्रचारे निरतं भजे।।

परशुराम सागर जैसे वृहत् ग्रन्थ के रचयिता पूवाचार्य की तपःस्थली से कौन परिचित न होगा। वह आचार्यपीठ में विद्यमान है।

अन्त में भगवान् श्रीराधासर्वेश्वर प्रभु के युगलचरणारविन्दों में यही मुहुर्मुहुः अभ्यर्थना है कि पूज्य आचार्यश्री की लेखनी इसी प्रकार सर्वथा निर्बाध भक्तिरस वर्षण कर हम सबको परम अनुग्रहीत करती रहे।

विनीत-

मुकुन्दशरण उपाध्याय, व्याकरणाचार्य
प्रधानाध्यापक-राज. प्रवे. संस्कृत विधालय
स्थायी पता-तिलोत्तमा नगरपालिका वडा नं. १८

जिला-रूपन्देही लुम्बिनी अंचल, (नेपाल)
शुभमिति-मार्गशीर्ष शुक्ल ११ (एकादशी) मंगलवार

विक्रम संवत् २०७१ श्रीगीता जयन्ती महोत्सव दि. २/१२/२०१४

।। श्रीसर्वेश्वरो जयति ।।

श्रीसर्वेश्वर प्रभु की प्रेरणा ही एकमात्र आधार है

प्राणिमात्र का जीवन क्षणभङ्गुर है। उन अनन्तकृपापयोधि सर्वेश्वर श्रीराधामाधव भगवान् की जब असीम अनुकम्पा होती है तभी यह मानव शरीर प्राप्त होता है। इसी भाव को अभिव्यक्त किया है-''श्रीमद्भागवत'' में यथा-विदेहराज निमि का भाव कितना सुन्दर प्रेरणाप्रद है--

दुर्लभो मानुषो देहो देहिनां क्षणभङ्गुरः।
तत्रापि दुर्लभं मन्ये वैकुण्ठप्रियदर्शनम्।।१।।

(श्रीभ्द्रा. स्क. ११ अ. २ श्लोक २९)

इसी प्रकार श्रीदत्तात्रेयजी का यह वचन हृदयङ्गम करने योग्य है--

लब्धा सुदुर्लभमिदं बहुसम्भवान्ते
मानुष्यमर्थदमनित्यमपीह धीरः।
तूर्णं यतेत न पतेदनुमृत्यु याव-
न्निः श्रेयसाय विषयः खलु सर्वतः स्यात्।।

(श्रीमद्भा. स्क. ११ अ. ९ श्लो. २९)

प्रथम तो यह मानव शरीर ही प्राप्त होना अति दुर्लभ है, उसमें भी यह शरीर क्षणभङ्गुर है, कब प्राणी की मृत्यु आजाय,

अतएव मृत्यु से पूर्व ही भगवदीय उपासना की जानी चाहिये जिससे कब वैकुण्ठाधिपति सर्वेश्वर अपने दर्शन देने का अनुग्रह करदें।।१।।

अनेक जन्मों के अनन्तर यह अत्यन्त दुर्लभ मानव शरीर को प्राप्त करके इस अनित्य जीवन को जिसके द्वारा भगवत्प्राप्ति होती है अतएव श्रेष्ठ पुरुषों को चाहिए कि मृत्यु से पूर्व ही अतिशीघ्र उन सर्वान्तरात्मा सर्वेश्वर प्रभु के मङ्गलमय दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त करले। सांसारिक कृत्यों को करने के लिए यह मनुज शरीर नहीं मिला है।।२।।

इन उपर्युक्त वचनों से स्पष्ट है कि यह देव दुर्लभ मानव शरीर प्राप्त करके अपने आराध्य जगन्नियन्ता सर्वेश्वर श्रीराधामाधव भगवान् का स्मरण-चिन्तन करे जिससे श्रीप्रभु कृपाप्रसाद सम्प्राप्त हो और यही इस मनुज जीवन का परम कर्तव्य है।

जागतिक कार्यों में अभिरत रहना महती क्षति है। इसी भाव से यह लघुकलेवरात्मक ''श्रीस्तवाराधना'' ग्रन्थ प्रस्तुत है, इसके मनन से यदि किसी का हित हुआ तो अतीव श्रेष्ठ है।

--श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

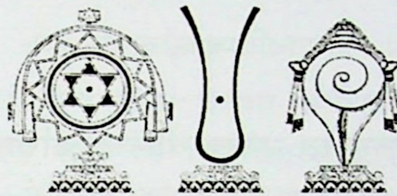
शुभमिति-मार्गशीर्ष शुक्ल ११ (एकादशी) मंगलवार

विक्रम संवत् २०७१

श्रीगीता जयन्ती महोत्सव

दिनांक २/१२/२०१४

।। श्रीसर्वेश्वरो जयति ।।



।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य नमः ।।

समर्पणम्

श्रीहंसभगवत्पादा-म्भोजे समर्प्यते हृदा।
अतो हर्षोऽस्तिमत्स्वान्ते ''श्रीस्तवाराधना'' शुभा।।

समर्पकः
त्वदीयचरणाम्बुजभक्तिकामः
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

शुभमिति-मार्गशीर्ष शुक्ल ११
मंगलवार, वि० सं० २०७१
श्रीगीता जयन्ती महोत्सव
दिनांक २/१२/२०१४

।। श्रीसर्वेश्वरो जयति ।।

।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री ''श्रीजी'' महाराज

प्रणीत-

स्तवाराधना

सर्वेश्वरप्रभुं वन्दे श्रीराधामाधवं प्रभुम्।
श्रीहंसं मनसा स्तौमि नारदं सनकादिकान्।।१।।

श्रीनिम्बार्कं हृदयाराध्यं वन्दे चक्रसुदर्शनम्।
पूर्वाचार्यान्सदा नौमि राधाकृष्णपदाश्रितान्।।२।।

अस्मद्गुरुं कृपाधाम सर्वेश्वरार्चनारतम्।
प्रत्यहं हवने जापे सत्कर्मणि स्थितं भजे।।३।।

''श्रीस्तवाराधना'' श्रेष्ठा सर्वदा मङ्गलप्रदा।
तन्यते रमणीया च हरेः प्रीतिः प्रदायिका।।४।।

श्रीपुष्कर - दशश्लोकी

(१)

पुष्करं परमं दिव्यं वेधसा शोभितं भजे।
यागरूपं महातीर्थं निर्मलाऽम्बुप्रपूरितम्।।

जगत्स्रष्टा श्रीब्रह्मदेव से अतिशय शोभायमान और यज्ञ रूप परम श्रेष्ठ तीर्थ जो अतीव स्वच्छ जल से परिपूर्ण अति दिव्य प्राचीन युगादितीर्थ समस्त तीर्थों के गुरु रूप श्रीपुष्कर का भजन स्मरण करते हैं।।१।।

(२)

सर्वतीर्थगुरुं वन्दे सावित्रीपरिराजितम्।
ऋषि-मुनिसमाराध्यं निर्जरैरभिवन्दितम्।।

श्रीब्रह्मा की सह धर्मिणी परम पूज्या श्रीसावित्रीजी से अति सुशोभित, अगस्त्य, वामदेव, विश्वामित्र प्रभृति ऋषि-मुनियों से शोभायुक्त समाराधित तथा देववृन्दों से प्रतिपल वन्दना किये गये एवं समग्र तीर्थों के गुरुरूप श्रीपुष्कर की वन्दना करते हैं।।२।।

(३)

मीन-कच्छपसंयुक्तं दर्दुरैरभिगुञ्जितम्।
कलहंस-बकाऽऽदिभी-रम्यं नमामि पुष्करम्।।

जिसमें मछलियाँ, कछुवें, मेढक, बतक-बगुला आदि जलचरों से अति रमणीय श्रीपुष्कर तीर्थ को अभिनमन करते हैं।।३।।

(४)

शुक-पिक-मयूरादि-पतगै-र्गुञ्जितं परम्।
पुष्करं सततं नौमि सद्भि-र्बुधैश्च सेवितम्।।

सन्त-महात्माओं एवं तीर्थ निवासी विद्वानों से परिपूजित तथा शुक (तोता) पिक (कोयल) मोर आदि पक्षिवृन्दों से परम गुञ्जायमान श्रीपुष्कर को प्रतिपल अभिनमन करते हैं।।४।।

(५)

प्राची-सरस्वती-नन्दा-स्रवन्तीरुचिरं भजे।
पुष्करं सर्वपापघ्नं सर्वलोकहितावहम्।।

प्राची-सरस्वती-नन्दा आदि पुण्य सलिला नदियों से शोभायुक्त, स्नान-आचमन-मार्जन करने पर सबके पापों का शमन करने वाले और प्राणिमात्र के लिए परम हितकारी ऐसे तीर्थ शिरोमणि श्रीपुष्कर का भजन-ध्यान करते हैं।।५।।

(६)

अगस्त्य-वामदेवादिकन्दरा यत्र शोभते।
नौमि तं पुष्करं तीर्थं पद्मपुराणवर्णितम्।।

अगस्त्य-वामदेव-विश्वामित्र आदि ऋषि-मुनियों की तपःस्थली कन्दरा (गुफायें) जहाँ सुशोभित हैं। ''श्रीपद्मपुराण'' में जिसका विस्तृत वर्णन है, उस पुष्कर तीर्थ को नमन करते हैं।।६।।

(७)

यत्र हि पापमोचिन्या मन्दिरं चारु दृश्यते।
तं पुष्करं हृदा वन्दे नानाघट्टसमन्वितम्।।

जहाँ पर श्रीपापमोचिनी देवी का सुन्दर मन्दिर का दर्शन

होता है और परम कमनीय विविध घाटों से अति शोभायुक्त है, ऐसे समस्त तीर्थों के गुरुरूप श्रीपुष्कर की अपने अन्तःकरण से वन्दना करते हैं।।७।।

(८)

हंसावतारकेन्द्रञ्च श्रीनिम्बार्ककराऽर्चितम्।
परशुरामदेवेन सेवितं पुष्करं भजे।।

श्रीहंस भगवान् ने जहाँ पर अवतार लिया और श्रीहंस भगवान् के अनन्तर महर्षिवर श्रीसनकादिक तथा देवर्षिप्रवर श्रीनारदजी ने उस स्थान पर विचरण किया एवं आपसे दीक्षित होकर श्रीसर्वेश्वर प्रभु सहित यहाँ पधार कर स्वकीय करारविन्दों से जिनका अर्चन किया और आपकी परम्परा में जगद्गुरु निम्बार्काचार्य-पीठाधीश्वर श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज ने निवास किया उस पुष्करतीर्थ का मनसा, वाचा, कर्मणा भजन चिन्तन करते हैं।।८।।

(९)

ब्रह्मर्षिणा कृता यत्र विश्वामित्रेण पर्वते।
तपस्या पावना श्रेष्ठा पुष्करं तञ्च भावये।।

ब्रह्मर्षि श्रीविश्वामित्रजी ने नाग पर्वत की उपत्यका अर्थात् तलहटी के अञ्चल में दीर्घकाल पर्यन्त दिव्य तपस्या की है उन सर्वोपरि तीर्थगुरु श्रीपुष्कर को अपने हृदयस्थल में भावना करते हैं।।९।।

(१०)

पुष्करं कमनीयञ्च नागपर्वतशोभितम्।
नमामि प्रत्यहं तीर्थं मनसा वचसा धिया।।

नाग पर्वत से परम शोभायमान अत्यन्त सुन्दर स्वरूप तीर्थगुरु श्रीपुष्कर को मन-वाणी तथा भक्तिपूर्वक अभिनमन करते हैं।।१०।।

(११)

श्रीपुष्करदशश्लोकी सुवाञ्छितफलप्रदा।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मिता।।

सुन्दर मनोरथ को प्रदान करने वाली यह ''पुष्कर-दशश्लोकी'' है। श्रीपुष्कर की कृपाजन्य इसकी रचना हुई, यही आन्तरिक भाव है।।

श्रीहंसाष्टकस्तोत्रम्

(१)

श्रीहंसं कृष्णरूपञ्च शुभ्रं शान्तस्वरूपकम्।
भगवन्तं परब्रह्म नमामि करुणाकरम्।।

परम दिव्य धवल श्रीहंस भगवान् जो अतीव शान्तमय, करुणार्णव और परब्रह्म श्रीकृष्णस्वरूप उनको समग्र विधा नमन करते हैं।।१।।

(२)

दिव्यं रूपधरं कृष्णं सर्वदेव प्रपूजितम्।
श्रीहंस परमाधारं प्रणमामि प्रभाकरम्।।

जो समस्त देववृन्दों के द्वारा परिपूजित हैं और परम आधार है एवं श्रीकृष्ण प्रभु ने ही दिव्य श्रीहंस स्वरूप को धारण किया है तथा जिनकी असीम अनुपम प्रभा है ऐसे श्रीहंस भगवान् को नित्य प्रणाम करते हैं।।२।।

(३)

निम्बार्कसम्प्रदायस्य पूर्वाचार्यांश्च सर्वदा।
स्वसम्प्रदायसर्वस्वं श्रीमद्धंसं हृदा भजे।।

श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के परम कृपा परायण समस्त परमाचार्यों को एवं स्वकीय सम्प्रदाय के सर्वस्व श्रीहंस भगवान् का अपने अन्तःकरण से सदा भजन करते हैं।।३।।

(४)

श्रीमद्भागवते यस्य वर्णितं चरितं प्रियम्।

तं श्रीहंसं सदा वन्दे सनकाद्यैः सुसेवितम्।।

श्रीमद्भागवत के एकादश स्कन्ध में जिनके दिव्य चरित का सुभग वर्णन है और जगत्स्रष्टा ब्रह्मदेव के चारों मानस पुत्र श्रीसनक–सनन्दन–सनातन–सनत्कुमार है जिनके द्वारा परिसेवित ऐसे श्रीहंस भगवान् की प्रतिदिन वन्दना करते हैं।।४।।

(५)

पुष्करारण्यभूलोकेऽवततार पुरा शुभे।
तञ्च हंसं नमामीशं प्रत्यहं शिरसा गिरा।।

परम रमणीय श्रीपुष्कर की पावन वसुधा पर प्राचीनकाल में कृष्णरूप परमेश्वर श्रीहंस भगवान् ने अवतार रूप में प्रकट हुए उन श्रीहंस भगवान् को नित्यप्रति वाणी एवं नतमस्तक पूर्वक कोटि–कोटि साष्टाङ्ग प्रणाम करते हैं।।५।।

(६)

सर्वेश्वरस्वरूपस्याऽर्चां प्राददाच्च पुष्करे।
श्रीसनकादिकेभ्य तं हंसं नितरां भजे।।

श्रीहंस भगवान् ने पुष्करारण्य में श्रीसनकादिकों को शालग्राम स्वरूप श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा प्रदान की उन श्रीहंस भगवान् का सर्वात्मना सश्रद्ध भजन करते हैं।।६।।

(७)

शालग्रामस्वरूपञ्च वन्दे सर्वेश्वरं परम्।
एवं परम्पराप्राप्तं श्रीमन्निम्बार्कपूजितम्।।

परात्पर श्रीसर्वेश्वर प्रभु जो दक्षिणावर्ती चक्राङ्कित सूक्ष्म शालग्राम विग्रह स्वरूप हैं तथा जो परम्परा से सम्प्राप्त हैं और

श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य से परिपूजित हैं उनकी अभिवन्दना करते हैं।।७।।

(८)

श्रीहंसं सनकादींश्च नारदं निम्बभास्करम्।
श्रीपूर्वाचार्यवर्यांश्च प्रणमामि पुनः पुनः।।

श्रीहंस-सनकादि-नारद-श्रीमन्निम्बार्काचार्य तथा समस्त पूर्वाचार्यों को पुनः पुनः कोटिशः साष्टाङ्ग प्रणाम अर्पित करते हैं।।।८।।

(९)

श्रीमद्धंसाष्टकं स्तोत्रं हंसभक्तिरसप्रदम्।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम्।।

यह ''श्रीहंसाष्टक'' स्तोत्र जो श्रीहंस भगवान् की रसात्मिका भक्ति प्रदान करने वाला है जिसकी रचना उन्हीं की प्रेरणाजन्य हुई है।।९।।

श्रीमानसाष्टक स्तोत्रम्

(१)

प्राणिमात्रमनोव्याधि र्दृश्यते वसुधातले।
आश्चर्यं परमाश्चर्यं प्रभोर्लीला च वर्तते।।

प्राणिमात्र की मानसिक व्यथा इस जगत् में अधिकांश दृष्टिगोचर हो रही है। वस्तुतः यह आश्चर्य से अधिकतम आश्चर्य है और इसे जगन्नियन्ता श्रीसर्वेश्वर भगवान् की अचिन्त्य माया ही समझनी चाहिए।।१।।

(२)

अतीव चञ्चलं लोके मनो भ्रमति नित्यदा।
तन्निरोधस्तु कर्तव्यः शास्त्रचिन्तनपारगैः।।

यह मन अतिशय चञ्चल है जो इस जगत् के व्यर्थ कार्यों में प्रतिपल भ्रमण करता रहता है, अतएव ''श्रीमद्भगवद्गीता'' ''श्रीमद्भागवत'' विभिन्न ''रामायण'' आदि उत्तमोत्तम शास्त्रों के ज्ञाताओं को चाहिए कि वे इस चपल मन का सर्वप्रकार से निग्रह करें तथा उत्तम साधकों को भी प्रेरित करें।।२।।

(३)

सत्सङ्गतिः सदा श्रेष्ठा पालनीया च सर्वदा।
यया हि चञ्चलस्यास्य मनसः रुज् प्रशाम्यति।।

श्रेष्ठ पुरुषों का प्रेरणादायी सङ्ग करे यह सत्सङ्गति सर्वदा ही हितप्रद है जिसके परिपालन करने पर इस अतीव द्रुतगामी चञ्चल की जो क्लेश है उसका परिशमन हो जायेगा।।३।।

(४)

एकदा ब्रह्मणः पार्श्वे समायाता महर्षयः।
श्रीसनकादयो दिव्या विचरन्तो हि पुष्करे।।

एक समय इस सम्पूर्ण विश्व के रचयिता जगत्पिता श्रीब्रह्मा के समीप पुष्करतीर्थ के पावन स्थल पर विचरण करते हुए महर्षिवर्य श्रीसनकादिक जिनका दिव्यतम पावन स्वरूप है वे पधारे।।४।।

(५)

त्रिगुणात्मकमन्तश्च तथैव भुवनत्रयम्।
कथमन्योन्यसंत्यागः प्रश्नं चक्रु-र्महर्षयः।।

तब वे महर्षिवर्य श्रीब्रह्मा के निकट आकर एक अत्यन्त गूढतम प्रश्न किया कि हे ब्रह्मन्! यह मन जो त्रिगुणात्मक (सत्व, रज, तम) से समन्वित है इसी प्रकार यह त्रिगुणात्मक समस्त जगत् भी है अतः इस चराचरात्मक जगत् से यह मन कैसे पृथक् हो।।५।।

(६)

चिन्तातुरो जगत्स्रष्टा तदा कृष्णः कृपार्णवः।
हंसरूपेण भूलोकेऽवततार च पुष्करे।।

महर्षिवर श्रीसनकादिकों के द्वारा प्रश्न किये जाने पर जब जगत्स्रष्टा श्रीब्रह्मा अतीव चिन्ता मग्न होगये तब कृपार्णव श्रीकृष्ण भगवान् श्रीहंसरूप में श्रीब्रह्मदेव के निकट सर्वतीर्थ गुरु श्रीपुष्कर की पावन धरित्री पर अवतीर्ण हुए।।६।।

(७)

विधाय च समाधानमन्तर्दधान केशवः।
सर्वेश्वरः कृपाधाम सर्वकल्याणकारकः।।

सभी जीवमात्र का कल्याण करने वाले कृपानिधि सर्वान्तरात्मा सर्वेश्वर कृष्णरूप श्रीहंस भगवान् ने श्रीसनकादिकों के प्रश्न का समाधान करके अन्तर्धान होगये।।७।।

(८)

अतस्तावन्मनोव्याधि र्हातव्या च सुधीजनैः।
तदैव जीवने शान्तिर्भवतीति सुनिश्चितम्।।

अतएव इस मानसिक व्याधि को बुद्धिमान् पुरुषों को चाहिए उसे सर्वथा त्याग करदें तभी इस मानव जीवन में निश्चित रूप से परम शान्ति प्राप्त होगी।।८।।

(९)

श्रीमानसाष्टकं स्तोत्रं ज्ञानभक्तिप्रदायकम्।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम्।।

विवेक और श्रीहरिभक्ति को प्रदान करने वाला यह ''श्रीमानसाष्टक स्तोत्र'' जिसका प्रणयन हंसरूप श्रीकृष्ण भगवान् का ही अनुकम्पा प्रसाद है।।९।।

श्रीपरशुराम-दशश्लोकी

(१)

निम्बार्कसम्प्रदायस्य दिव्याचार्यं जगद्गुरुम्।
श्रीमत्परशुरामञ्च देवाचार्यं समाश्रये।।

श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के देदीप्यमान अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज का परम मङ्गलकारी आश्रय लेते हैं।।१।।

(२)

श्रीहरिव्यासदेवस्य श्रेष्ठं शिष्यं नमाम्यहम्।
असीमसिद्धिसम्पन्नं श्रीसर्वेश्वरचिन्तकम्।।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर 'महावाणीकार' रसिकराजराजेश्वर श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज के कृपापात्र अति श्रेष्ठ शिष्य जो श्रीसर्वेश्वर प्रभु के प्रतिपल ध्यान में अभिरत एवं परमोत्तम सिद्धियों से परिपूर्ण श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज को कोटि-कोटि प्रणाम करते हैं।।२।।

(३)

वृहत्परशुरामाख्य-सागरग्रन्थलेखकम्।
सत्सनातनधर्मस्यप्रचारे निरतं भजे।।

''श्रीपरशुरामसागर'' विशाल ग्रन्थ की आपश्रीने प्रेरणाप्रद रचना से सबका हित किया है और अनादि वैदिक सनातन धर्म के प्रचुर प्रचार करने में अनवरत अभिरत रहते हैं। ऐसे परमाचार्यवर्य श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज का भजन-ध्यान करते हैं।।३।।

(४)

वैष्णवधर्मरक्षार्थं विहरन्तं मरुस्थले।
निम्बार्कतीर्थमागत्य हवने तत्परं भजे।।

इसी प्रकार अनादिवैदिक श्रुति-स्मृति-सूत्र-पुराणादि प्रतिपादित लोक कल्याणकारी वैष्णवधर्म की सर्वविध सुरक्षा के लिए मारवाड़ प्रदेश में सर्वत्र परिभ्रमण करते हुए ''श्रीपद्मपुराण'' में वर्णित श्रीनिम्बार्कतीर्थ पधार कर प्रतिदिन हवन करने में तत्पर रहते हैं। आज भी हवन कुण्ड उसी का प्रतीक है, ऐसे आपश्री के मङ्गल स्वरूप का भजन-स्मरण करते हैं।।४।।

(५)

यवनसिद्धिछेत्तारं हरिभक्तिप्रचारकम्।
परशुराममाचार्यं वन्देऽहं नित्यशः सुधिम्।।

अपने सदुपेदशों के द्वारा उत्तम पुरुषों को श्रीराधाकृष्ण भगवान् की रसमयी भक्ति का प्रचार करने में सदा ही तत्पर और श्रीनिम्बार्कतीर्थ समीपवर्ती रहने वाला मस्तिंगशाह यवन फकीर जो अपनी पैशाचिक तान्त्रिक शक्ति से सन्त-महात्माओं एवं तीर्थ यात्रियों को अत्यन्त कष्ट देने वाले उस यवन फकीर की पैशाचिक सिद्धियों का निराकरण करने में परम समर्थ आचार्यवर्य श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज का प्रतिपल स्मरण पूर्वक उनकी अभिवन्दना करते हैं।।५।।

(६)

श्रीसर्वेश्वरसेवायां सर्वदा तत्परं भजे।
ऊर्ध्वपुण्ड्रधरं चारु गोपीचन्दनचर्चितम्।।

गोपीचन्दन से द्वादश अतिसुन्दर ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक धारण करने पर अतीव शोभास्पद एवं अपने परमाराध्य श्रीसर्वेश्वर प्रभु की दिव्य सेवा में सर्वदा अभिरत श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर जगद्गुरु श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज का भजन-आराधन करते हैं।।६।।

(७)

श्रीहरिवंशदेवस्य सद्गुरुं नित्यमाश्रये।
तत्त्ववेत्तागुरं भक्त्या नमामि शास्त्रपारगम्।।

श्रीहरिवंशदेवाचार्यजी के हृदयाराध्य श्रीगुरुवर्य का प्रतिदिन आश्रय ग्रहण करते हैं। श्रुति-स्मृति-सूत्र-तन्त्र-पुराणादि शास्त्रों के परम ज्ञाता और श्रीतत्त्ववेत्ताजी के गुरुवर्य श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज को भक्तिपूर्वक अभिनमन करते हैं।।७।।

(८)

श्रीपीताम्बरदेवस्य गुरुवर्यं समाश्रये।
परशुरामदेवञ्च वैष्णवाचार्यमीदृशम्।।

श्रीपीताम्बरदेवजी के गुरुवर्य एवं ऐसे वैष्णवाचार्य श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज जिनका आश्रय लेना परम हितकारी है।।८।।

(९)

रामदेवगुरुं प्रेष्ठं लक्कडदेव (लावण्यदेव) गुरुं भजे।
श्रीहरिवंशदेवञ्च पुनर्नमामि सादरम्।।

आपश्री के एक और शिष्य जिनका नाम श्रीरामदेवजी था अपर शिष्य श्रीलक्कडदेवजी (श्रीलावण्यदेवजी) भी थे। इस प्रकार श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज के चार शिष्य ये थे। इनमें प्रमुख

श्रीहरिवंशदेवाचार्यजी थे, जो आचार्यपीठ पर विराजे। इन सभी के परम गुरुवर्य श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर जगद्गुरु श्रीपरशुरामदेवा-चार्यजी महाराज को सादर नमन करते हैं। इन शिष्यों का क्रमशः वर्णन इस प्रकार है। यथा--१. श्रीहरिवंशदेवाचार्यजी, श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ पर, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) में समासीन हुए। २. श्रीपीताम्बरदेवजी, श्रीगोपाल मन्दिर, ग्राम चला जि. सीकर में विराजे। ३.श्रीतत्त्ववेत्ताजी, श्रीगोपाल मन्दिर, जैतारण जि. नागौर में विराजे। ४. श्रीरामदेवजी, श्रीगोपाल मन्दिर, छोटा नरेना जि. अजमेर में निवास किया। ५.श्रीलक्कडदेवजी (श्री लावण्देवजी) श्रीगोपाल मन्दिर, ग्राम कालपी जि. जालोन (उ. प्र.) में निवास किया।

(१०)

पीठस्य परमाचार्यं वन्देऽहं श्रद्धया सदा।
परशुराममाचार्यं देवाचार्यं जगद्गुरुम्।।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज की श्रद्धापूर्वक अभिवन्दना करते हैं।।१०।।

(११)

श्रीमत्परशुरामस्य दशश्लोकी रसप्रदा।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मिता।।

''श्रीपरशुराम-दशश्लोकी'' जो परमानन्द को प्रदान करने वाली है, जिसकी रचना इन्हीं श्रीआचार्यप्रवर का अनुकम्पा प्रसाद है।।११।।

(१)

पुष्कर पावन तीर्थ का, सुयश अतीव अपार।
सकल तीर्थ के परम गुरु, विदित ''शरण'' संसार।।

(२)

ब्रह्मदेव ने श्रीपुष्कर, यज्ञ किया शुभ जान।
निर्मल जल से स्नान हो, कहत ''शरण'' परमान।।

(३)

कार्तिक सुदि एकादशी, पूनम तक अधिवास।
सकल तीर्थ आवत यहाँ, पुष्कर ''शरण'' निवास।।

(४)

तीर्थ पुष्करारण्य का, वर्णन शास्त्र पुरान।
ऋषि-मुनीश्वर करत वास, करत ''शरण'' सन्मान।।

(५)

विस्तृत ''पद्मपुराण'' में, वर्णन श्रेष्ठ महान।
सावित्री शोभित जहाँ, पुष्कर ''शरण'' विधान।।

(६)

मोर-कोकिला करत धुनि, भ्रमर करत गुञ्जार।
शुक-सारिका-बतक-बक, विचरत ''शरण'' निहार।।

(७)

सस्वर करत वेद घोष, बुधजन मुदित अपार।
ब्रह्मचारी वटुक यहाँ, ''शरण'' श्रुति संचार।।

(८)

ब्रह्माजी के दरश शुभ, पुष्पमाल्य अवधार।
उत्तमजन आशीर्वचन देते, ''शरण'' निहार।।

(९)

वृक्ष-वृक्ष पर बैठ कर, मर्कट उछलत नित्य।
गोमाता शुभ दरश है, भणत ''शरण'' आदित्य।।

(१०)

नन्दा-प्राची-सरस्वती, अतुलित महिमा जान।
पावन सरिता बहत नित, करहु ''शरण'' जलपान।।

(११)

चहुंदिशि शोभा घाट की, पुष्कर परम महान।
प्रतिपल इनको नमन है, ''शरण'' सदा सन्मान।।

(१२)

युगादि पुष्कर तीर्थ में, नान्ह करहु जल माहि।
निखिल जन्म के पाप पुञ्ज, ''शरण'' सुनिश्चय जाहि।।

(१३)

अतुलित महिमा दान की, श्रद्धास्पद हो दान।
पुष्करादिक तीर्थ में, यही ''शरण'' अवमान।।

(१४)

पुष्कर तीर्थ समीप में, एक तीर्थ शुभ जान।
श्रीनिम्बारकतीर्थ है, पावन ''शरण'' महान।।

(१५)

परशुराम मन्दिर सुभग, आनद होत अपार।
पुष्कर में शोभित सदा, प्रणति ''शरण'' अवधार।।

(१६)

मीरा के आराध्य हैं, श्रीगिरिधर गोपाल।
यहीं विराजत श्रीमन्दिर, ''शरण'' प्रणति महिपाल।।

(१७)

असंख्य भावुक भक्तजन, नित्य करत गुणगान।
तीर्थगुरु श्रीपुष्कर को, प्रणति ''शरण'' सन्मान।।

(१८)

पुष्कर के वसुधा सुधी, अँचवत निर्मल वारि।
निज मानस पुलकित सदा, दुरित समस्त निवारि।।

(१९)

गिरिधर प्रभु दर्शन करें, प्रतिदिन बारम्बार।
प्रभु की कृपा अवश्य हो, ''शरण'' शास्त्र का सार।।

(२०)

श्रीनिम्बार्क तीर्थ में, सर्वेश्वर शुभ दर्श।
श्रीहरिभक्ति मिलै तभी, ''शरण'' निजान्तर हर्ष।।

(२१)

राधामाधव की कृपा पावत निश्चय जान।
तन्मयता से ध्यान हो, यही ''शरण'' शुभ मान।।

सदुपदेशात्मक - दोहावली

(१)

जगत तृष्णा अति घातक, त्याग करहु तत्काल।
यही हितावह है सदा, होवे ''शरण'' निहाल।।

(२)

हरि दरश की हो तृष्णा, मङ्गल उसमें जान।
ऐसी स्पृहा सतत करें, ''शरण'' तभी सन्मान।।

(३)

वाणी में हो मधुरता, पूज्य जनों को मान।
यही हितावह कार्य है, ''शरण'' तभी सुख जान।।

(४)

भगवच्चिन्तन सम्पदा, इसे हृदय अवधार।
लौकिक चिन्ता त्याग दे, ''शरण'' यही शुभ सार।।

(५)

उत्तमजन सेवा करें, गीता वचन निहार।
सुसाधु सङ्गति है सुभग, ''शरण'' कुसंग विसार।।

(६)

दुःखीजन शुभ सेवा हो, यह कर्तव्य महान।
गोसेवा अति श्रेष्ठतम, ''शरण'' कथन श्रुति ज्ञान।।

(७)

पक्षी सेवा जो करे, और अन्न का दान।
यही नरोत्तम धर्म है, सदा ''शरण'' अवभान।।

(८)

दीन भाव से जो रहे, उसका आदर होय।
सुख सम्पदा वरण करे, निश्चय ''शरण'' निचोय।।

(९)

श्रीसर्वेश्वर भजन हो, सर्वेश्वर का ध्यान।
चिन्तन सतत उन्हीं का, ''शरण'' प्रभू गुण गान।।

(१०)

निम्बार्क भगवान सुयश, गावो ध्यान लगाय।
निजी मनोरथ पूर्ण हो, ''शरण'' गुणी जन गाय।।

(११)

माता-सेवा सतत हो, मानव पावन धर्म।
पितृ सेवा भी करहु नित, ''शरण'' शास्त्र का मर्म।।

(१२)

गुरु सेवा का ध्यान हो, समुचित धर्म महान।
यही शिष्य का कार्य है, ''शरण'' प्रणति पुनि जान।।

(१३)

हरि भक्ति में जो अभिरत, पावत शान्ति अपार।
तन्मयता से हो भजन, ''शरण'' शास्त्र का सार।।

(१४)

श्रीसद् गुरु शरणागति, उत्तम साधक होय।
उसका जीवन सफल हो, ''शरण'' भक्ति संजोय।।

(१५)

सदा समय गतिशील है, निज मन यह अवधार।
यही कर्तव्य श्रेष्ठतम, ''शरण'' नाम उच्चार।।

(१६)

श्रीवृन्दावन वास हो, युगल प्रियाप्रिय ध्यान।
तरुवर छाया सुखद है, ''शरण'' यमुनाम्बु पान।।

(१७)

श्रीगोवर्धन निकटतम, निम्बग्राम निवास।
दिव्य सुदर्शन कुण्ड जल, अचवन ''शरण'' विभास।।

(१८)

निम्बार्क भगवान् के, दर्शन सुन्दर होय।
दरश मात्र से सकल फल, ''शरण'' मिलत सब कोय।

(१९)

वरसाना-नदगाँव की, होरी दर्शन पाय।
अबीर-गुलाल मेघवत, वरषत ''शरण'' झराय।।

(२०)

श्रीव्रजगोपी गोप सब, मिलकर खेलें होरि।
फालेन होरि सिद्ध है, ''शरण'' दरश कर जोरि।।

(२१)

मानसि गंगा शुभ दरश, गोवर्धन गिरिराज।
सुपावन अम्बु पान से, ''शरण'' कृपा व्रजराज।।

(२२)

चरण पादुका ललित सर, दर्शन सुखद सुयोग।
सु-श्रीनिवासाचार्यवर, प्रणशत ''शरण''कुयोग।।

(२३)

जगत कार्य से रहित हो, राधामाधव ध्यान।
नृजीवन की सार्थकता, ''शरण'' तभी कल्यान।।

(२४)

श्रीहरि कीर्तन नित्य हो, गावो श्रीहरि नाम।
मानवता कर्तव्य है, ''शरण'' सुखद परिणाम।।

*

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री ''श्रीजी'' महाराज

द्वारा विरचित-

❊ ग्रन्थमाला ❊

क्र. सं.			प्रकाशित श्लोक सं.
१.	श्रीनिम्बार्क भगवान् कृत प्रातःस्तवराज पर (युग्मतत्त्व प्रकाशिका) नामक संस्कृत व्याख्या	,,	
२.	श्रीयुगलगीतिशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	११८
३.	उपदेश - दर्शन (हिन्दी-गद्यात्मक)	,,	
४.	श्रीसर्वेश्वर-सुधा-बिन्दु (पद सं. १३२)	,,	
५.	श्रीस्तवरत्नाञ्जलिः (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	३९५
६.	श्रीराधामाधवशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१०५
७.	श्रीनिकुञ्ज-सौरभम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	५८
८.	हिन्दु-संघटन (हिन्दी-गद्यात्मक)	,,	
९.	भारत-भारती-वैभवम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१३७
१०.	श्रीयुगलस्तवविंशतिः (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१८६
११.	श्रीजानकीवल्लभस्तवः (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	४०
१२.	श्रीहनुमन्महिमाष्टकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	२२
१३.	श्रीनिम्बार्कगोपीजनवल्लभाष्टकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१५

कुल हिन्दी पद सं० २७८२ कुल श्लोक सं० २२४४



अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य

श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज



अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य

श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज



अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधा–सर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज का जन्म विक्रम संवत 1986 वैशाख शुक्ल 1 शुक्रवार तदनुसार दिनांक 10 मई, 1929 को निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) में हुआ। अपकी माताश्री का नाम स्वर्णलता (सोनीबाई) एवं पिताश्री का नाम श्रीरामनाथजी शर्मा गौड़ इन्दोरिया था। आप जैसे नक्षत्रधारी महापुरुष के जन्म से यह विप्र वंश धन्य हुआ है। आपश्री 11 वर्ष की अल्पावस्था में वि.सं. 1997 आषाढ़ शुक्ल 2 रविवार (रथयात्रा) के शुभावसर पर अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज से वैष्णवी दीक्षा से दीक्षित होकर पीठ के उत्तराधिकारी नियुक्त हुए। वि.सं. 2000 में पूज्य गुरुदेव के गोलोकवास होने पर 14 वर्ष की अवस्था में ज्येष्ठ शुक्ल 2 शनिवार दिनांक 5 जून 1943 को आचार्यपीठ पर आसीन हुए। तदनन्तर 4 वर्ष तक श्रीधाम वृन्दावन में न्याय–व्याकरण–वेदान्त आदि शास्त्रों का अध्ययन किया। वज्रविदेही चतु:सम्प्रदाय श्रीमहन्त श्री धनञ्जयदासजी काठिया बाबा महाराज तर्क–तर्कतीर्थ जैसे महानुभावों का आपको संरक्षण प्राप्त हुआ। आपश्री के आचार्यत्वकाल में वैष्णव चतु:सम्प्रदायों के आचार्यों, श्रीमहन्तों, सन्त महात्माओं, समस्त शंकराचार्यों श्रीकरपात्रीजी महाराज, महामण्डलेश्वरों, देश के मूर्धन्य मनीषियों, राजा–महाराजाओं, राजनेताओं के साथ निकटतम घनिष्ठ सम्पर्क बढ़ा। श्री निम्बार्क सम्प्रदाय का चतुर्दिक् विस्तार हुआ। वि.सं. 2001 में आपश्री ने 15 वर्ष की अवस्था में कुरुक्षेत्र के विराट् साधु सम्मेलन में जगद्गुरु पुरीपीठाधीश्वर श्रीभारतीकृष्णतीर्थजी महाराज के तत्त्वावधान में अध्यक्ष पद को अलंकृत किया।

आपश्री के कार्यकाल में तीनधाम सप्तपुरी की यात्रा सम्पन्न हुई। प्रयाग, हरिद्वार (वृन्दावन), उज्जैन, नासिक इन चारों स्थानों के कुम्भ पर्वों पर अनेकश: श्रीनिम्बार्कनगर में समायोजित धार्मिक अनुष्ठानों, धर्माचार्यों के सदुपदेशों, विविध सम्मेलनों द्वारा समग्र जन समुदाया को सन्मार्ग की ओर प्रेरित किया जाता है। इसी प्रकार सं. 2026 में वजयात्रा, 2031 में विराट् सनातन धर्म सम्मेलन, 2047 में श्रीमुरारी बापू की रामकथा, 2050 में स्वर्ण जयन्ती समारोह के अवसर पर अ.भा. विराट् सनातन धर्म सम्मेलन, 2061 में श्री भगवन्निम्बार्काचार्य 5100वां जयन्ती महोत्सव पर विराट् सनातनधर्म सम्मेलन, 2062 में युगसन्त श्रीमुरारीबापू द्वारा श्रीरामकथा, 2063 में श्रीरमेश भाई ओझा द्वारा श्रीमद्भागवत कथा आदि आयोजनों द्वारा जो धार्मिक चेतना जन–जन में स्फुरित करायी गयी वह सदा स्मरणीय है। प्रत्येक अधिकमास में आचार्यपीठ पर आयोजित होने वाले अष्टोत्तरशतभागवत, यज्ञानुष्ठान, प्रवचन श्रीरासलीलानुकरण आदि कार्यक्रम भी सदा प्रेरणाप्रद रहते हैं। आप द्वारा प्रतिदिन किया जाने वाला श्रीयुगलनाम–संकीर्तन भी श्रवणीय होता है। सन् 1966 में दिल्ली के विराट् गो–रक्षा सम्मेलन में आपश्री का सपरिकर पादार्पण हुआ था। इस अवसर पर स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज एवं अन्य धर्माचार्यों से जो महनीय विचार विमर्श हुआ वह परम ऐतिहासिक है।

आपश्री ने अपने आचार्यत्व काल में जितना देश–देशान्तरों में सम्प्रदाय का वर्चस्व बढ़ाया है उतना ही देवालयों के निर्माण, जीर्णोद्धार, शैक्षणिक संस्थाओं का निर्माण–संचालन, साहित्य प्रकाशन, नूतन ग्रन्थ रचना, गोशाला, मुद्रणालय आदि संस्थाओं द्वारा आचार्यपीठ का सर्वतोभावेन विकास किया है। आपश्री द्वारा रचित 37 ग्रन्थों में से भारत–कल्पतरु ग्रन्थ का विमोचन भारत के उपराष्ट्रपति श्रीशंकरदयालजी शर्मा ने दिल्ली में किया। इसी प्रकार आपके अन्य ग्रन्थों का मूर्द्धन्य राजनेताओं, शीर्षस्थ महापुरुषों, जगद्गुरुओं द्वारा विमोचन समारोह सम्पन्न हुये हैं। एवं आप द्वारा प्रणीत रचनाओं पर तीन–चार शोधप्रबन्ध भी प्रस्तुत हुए हैं जो मननीय हैं। अस्वस्थ अवस्था में भी आप निरन्तर क्रियाशील रहते है। आपश्री का संरक्षण पाकर और आपश्री के महान् व्यक्तित्व व कृतित्व से श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय किंवा सनातन धर्म जगत् विशेषत: उपकृत हुआ है। आपके मधुर दर्शन की एक झलक पाने और आपश्री के वचनामृत सुनने के लिए धार्मिक जन सदा समुत्सुक रहते हैं।